P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-12* August- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

''कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के छात्र–छात्राओं का कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृति का अध्ययन''

सरिता मेनारिया
सहायक आचार्या,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
लोक मान्य तिलक टी.टी.कॉलेज,
डबोक,उदयपुर,
राजस्थान

जगदीश बाबल
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
जर्नादन राय नागर विद्यापीठ,
उदयपुर, राजस्थान

सारांश

मानव सभ्यता के विकास के विभिन्न सोपानों में प्रगति का जितना बड़ा योगदान अग्नि तथा पहिये का रहा है, सम्भवतः वर्तमान में उतना ही योगदान कम्प्यूटर का रहा है। ऐसे में अपेक्षा तो यह होती है कि समाज का प्रत्येक नागरिक कम्प्यूटर के उपयोग से एवं उसके संचालन क्रियाविधि आदि से परिचित हो। अतः कम्प्यूटर के बढ़ते प्रचलन के तथा इस पर समाज की निर्भरता को देखते हुए उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना आवश्यक प्रतीत होता है।

मुख्य शब्द : संकाय, कम्प्यूटर, अभिवृत्ति

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास के विभिन्न सोपानों में प्रगति का जितना बड़ा योंगदान अग्नि तथा पहिये का रहा है, सम्भवतः वर्तमान में उतना ही योगदान कम्प्यूटर का रहा है। सैकड़ों वर्ष पूर्व गणना के लिए सबसे पहले बनी युक्ति एवं एबेकस का चीन में निर्माण हुआ था। एबेकस के बाद सन् 1617 में स्कॉटलेण्ड के गणितज्ञ जॉन नेपियर ने एक युक्ति का अविष्कार किया जो कि नेपियनस बोन के नाम से जानी गई तत्पश्चात सन् 1642 में फ्रांस के बालक बेल्ज पास्कल ने पास्कल केलक्यूलेटर बनाया इसके कई वर्षों बाद जर्मनी के वैज्ञानिक गोट फ्रेड, बोन लेबनिडस ने गणना हेतु लेबसेडस मशीन बनाई। 19 वीं शताब्दी के आते–आते इग्लैण्ड के गणितज्ञ चार्ल्स बाबेज ने ड्रिफ्रेंश इंजन का अविष्कार किया जोकि कम्प्यूटर निर्माण में मील का पत्थर साबित हुआ उन्होंने अपनी मशीन को सुधार ने हुए एनालेटिकल इंजन बनाया जो कि आधुनिक कम्प्यूटर के प्रारूप से मिलती जुलती संरचना थी। प्रथम कम्प्यूटर 1946 में अस्तित्व में आया ENIAC (Ele. N. In. and. Computer)यह कम्प्यूटर विकसित होते होते 5 वीं पीढ़ी में जीवन चर्या के प्रत्येक क्षेत्र एवं उपकरण जैसे मोबाइल, घड़ी, केमरा, म्यूजिक, सिस्टम, यातायात, संचालन, युद्ध की रणनीति, चिकित्सा, एवं मनोरंजन के साधन, आदि–इत्यादि मे अपनी प्रत्यक्ष पंहुच बना चुका है। ऐसे में अपेक्षा तो यह होती है कि समाज का प्रत्येक नागरिक कम्प्यूटर के उपयोग से एवं उसके संचालन क्रिया विधि आदि से परिचित हो किन्तु प्रायः ऐसा होता नहीं है चूंकि कुछ व्यक्तियों का यह मानना है कि विज्ञान के विद्यार्थी को कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति स्वाभाविक रूप से अधिक अभिवृति रखनी चाहिये जबकि अन्य संकाय के विद्यार्थियों के लिए प्रायः इसकी आवष्यकता नहीं समझी जाती है किन्तु इस प्रकार के विचार वर्तमान संचार क्रांति के परिपेक्ष्य में संगत प्रतीत नहीं होते है। अतः कम्प्यूटर के बढ़ते प्रचलन के तथा इस पर समाज की निर्भरता को देखते हुए उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना आवश्यक प्रतीत होता है चूंकि ये ही विद्यार्थी आने वाले कुछ ही वर्षों में समाज में नागरिकों के रूप में तथा रोजगार क्षेत्र में कर्मचारी के रूप कम्प्यूटर उपयोग के अभाव में पिछड़ जाते है।

संकाय

राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति 1986 की अनुशंसा पर लागू पाठ्यक्रम के अनुसार 10+2 प्रणाली में उच्च माध्यमिक स्तर पर विभिन्न विषय चुनने की विद्यार्थियों को सुविधा प्रदान की गई है जिसमें साहित्य, भाषा, राजनीति, इतिहास, भूगोल आदि विषय को कला संकाय तथा गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान आदि विषयों को विज्ञान संकाय तथा इसी प्रकार विषय की प्रकृति के अनुसार उन्हें जिस वर्ग में रखा गया, को संकाय कहा गया।

कम्प्यूटर

कम्प्यूटर का प्रयोग विभिन्न सूचनाओं को सुचारू एवं संगठित रूप से संग्रहित करने तथा आवश्यकतानुसार उनका उपयोग विविध रूपों में करने के लिए किया जाता है।

कम्प्यूटर शब्द कम्प्यूटर से बना है जिसका अर्थ होता है गणना करना। कम्प्यूटर न केवल गणितीय बल्कि तार्किक समस्याओं का भी समाधान करता है।

अभिवृत्ति

व्यक्ति किसी निश्चित समाज में रहता है और ज्ञान प्राप्त करने के लिए विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करता हैं तो व्यक्ति या विद्यार्थी के बाह्य तथा वस्तुओं विषयों विचारों तथा घटनाओं के प्रति कुछ निश्चित धारणाएँ विकसित हो जाती है। इन धारणाओं के कारण विद्यार्थी किसी को कम पसन्द करता है। किसी को ज्यादा पसन्द करता किसी को बिल्कुल पसन्द नही करता और किसी के बारे में अनिश्चित की स्थिति में रहता है। इन धारणाओं के परिणाम स्वरूप ही हम बाह्य पदार्थो, घटनाओं, विचारों, व्यक्तियों, विषयों धर्मो, राष्ट्रों, जातियों, सम्प्रदायों, प्रथाओं तथा संस्थाओं आदि के प्रति एक निश्चित अभिवृत्ति बना लेते है ये अभिवृत्ति नकारात्मक तथा सकारात्मक दोनों ही प्रकार की हो सकती है।

समस्या का औचित्य

वर्तमान में शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य समझी जाती है। जहां एक ओर षिक्षा सामाजिक व राजनैतिक परिवर्तन एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है वही विज्ञान के बढ़ते विकास ने शिक्षा विज्ञान अथवा तकनीकी का महत्वपूर्ण अंग माना जाने लगा है।

कम्प्यूटर के विभिन्न उपयोगों को देखते हुए यह जानना जरूरी हो गया है कि संकाय भिन्नता के विद्यार्थियों का कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति दृष्टिकोण व अभिवृत्ति क्या है ? इसका अध्ययन महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। इस अध्ययन से कम्प्यूटर द्वारा शिक्षा प्राप्त करने व देने के मूल्यांकन में सहायता मिलती है वही दूसरी और संकाय भिन्नता के विद्यार्थियों का कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति का आंकलन भी होगा।

समस्या अभिकथन

'प्रस्तुत शोध का समस्या कथन इस प्रकार है– ''कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के छात्र–छात्राओं का कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृति का अध्ययन।''

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये–

1. कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. कला तथा वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. कला तथा विज्ञान विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. विज्ञान तथा वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के छात्र तथा छात्राओं की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्ष

राजस्थान में 33 जिले है इनमें से शोधकर्ता ने जोधपुर जिले का चयन किया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त विधि –

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोध अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के छात्र–छात्राओ की ''कम्प्यूटर के उपयोग का तुलनात्मक अध्ययन'' हेतु एक स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया है।

''कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति मापनी''

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण विभिन्न सांख्यिकी तकनीक मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी परीक्षण द्वारा किया गया।

समस्या का परिसीमन

इस शोध को जोधपुर जिले तक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विभिन्न संकायों (कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय) के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया। इस शोध हेतु कुल 60 विद्यार्थियों का चयन (जिसमें से 30 छात्र एवं 30 छात्राएँ) सोद्देश्य यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है। इस शोध अध्ययन में केवल हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों को शामिल किया गया।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

यादव, सुधा (1991) ने छात्रों, अभिभावकों एवं षिक्षकों की दूरदर्शन के शैक्षिक कार्यक्रमों के पक्ष में मत व्यक्त किया।

अग्रवाल, निशा (1991) ने छात्रों तथा शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रति अभिवृति में शिक्षकों ने इसके पक्ष में मत व्यक्त किया।

ललिता कुमारी (2001), "Study of Technology and it is use in education' एम. एड. डेजरटेशन ने J.N.V.U. यूनिवर्सिटी पर शोध कार्य किया इस शोध के निष्कर्ष निम्न है –

विद्यालय में विभिन्न शिक्षकों द्वारा प्रयोग की जाने वाली दृष्य सामग्री के बारे में कहा है कि विज्ञान शिक्षण हेतु चार्ट, मॉडल, रेडियों, टेपरिकार्डर, फिल्म पट्टी, स्लाइड, प्रोजेक्ट, चलचित्र तथा कम्प्यूटर आदि दृश्य श्रव्य सामग्री का अधिक प्रयोग किया गया है। व्यवहारिक समस्या सुलझाने वाले प्रश्न पर सभी अध्यापकों की सहमति बहुत कम प्राप्त है।

ली, शियो, थो, (2001) ''कम्प्यूटर लिटरेसी एण्ड एटीटयूड टुवर्डस कम्प्यूटर्स इन फोर सेलेक्टैड फाइव इयर जूनियर टेक्रिकम कालेजेज इन ताईवान'' यू. इण्टर नेशनल यूनिवर्सिटी ''2001''डेजरटेशन एब्सेट्रक्ट

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-12* August- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

इण्टर नेशलल वाल्यूम 48 नं. 7 इस अध्ययन का उद्देश्य कम्प्यूटर सम्बन्धित कार्य को आरम्भ करने व समाप्त करने के पश्चात् विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति एवं उनके कम्प्यूटर साक्षरता का स्तर को निश्चित करना था। विद्यार्थियों की अभिवृत्ति एवं कम्प्यूटर साक्षरता के स्तर महत्वपूर्ण सम्बन्ध था।

विन्टर वोन्स ''इस असेसमेन्ट ऑफ टीचर कम्प्यूटर रिकलस 2002'' ब्रासनन पैट्रिशिया एन. पी. एच. डी स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क, बफलो 2002 डेजरटशन एवं एब्सट्रेक्स इण्टर नेशनल वालयूम 50 नं. 7 जनवरी 2002 ''इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि अध्यापकों का कम्प्यूटर कौशल सामान्य कम्प्यूटर प्रयोग एवं वर्ड प्रोसेसिंग'' का क्षेत्र में मजबूत होता है। अध्यापकों ने इस तथ्य को स्वीकारा कि वे कम्प्यूटर कौशल में कमजोर है और सीखने के इच्छुक है।

रमाकान्त शर्मा (2003) विभिन्न प्रकार के उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के संस्था प्रधानों की कम्प्यूटर के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष में उच्च माध्यमिक स्तर के संस्था प्रधानों में कम्प्यूटर के प्रति अभिवृति माध्यमिक स्तर के संस्था प्रधानों की तुलना में अधिक पायी गयी।

प्रस्तुत शोध का सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या – 1

जोधपुर जिले के कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों का कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों से प्राप्त मध्यमान

क्र. सं.	आयाम का नाम	कुल न्यादर्श (N=75)		
		कला वर्ग के विद्यार्थी (N=20)	विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी (N=20)	वणिज्य वर्ग के विद्यार्थी (N=20)
		मध्यमान	मध्यमान	मध्यमान
1	कुल	39.02	37.19	36.24

उपर्युक्त सारणी संख्या 1 अनुसार – कला वर्ग, विज्ञान वर्ग तथा वाणिज्य वर्ण के विद्यार्थियों का माध्यमान क्रमषः 39.02, 37.19 तथा 36.24 प्राप्त हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि कला वर्ग के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति सर्वाधिक तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति न्यूनतम पायी गई। तीनों संकाय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तर से अधिक पायी गयी।

सारणी संख्या 2

जोधपुर जिले के कला तथा वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों का कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों से प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र.सं.	स्मूह	समूह संख्या (N)	मध्यमान M	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात (t)	सार्थकता (.05 विश्वास स्तर पर)
1	कला वर्ग के विद्यार्थी	20	39.02	4.33	2.06	सार्थक
2	वणिज्य वर्ग के विद्यार्थी	20	36.24	4.19		

उपर्युक्त सारणी संख्या 2 के अनुसार जोधपुर जिले के कला वर्ग के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति के विश्लेषण गणना का मध्यमान 39.02 व प्रमाप विचलन 4.33 प्राप्त हुआ तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 36.24 व प्रमाप विचलन 4.19 प्राप्त हुआ। दोनों समूह में विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित अंतर की सार्थकता जांचने हेतु ज्ञात किया गया क्रांतिक अनुपात 2.06 प्राप्त हुआ जो कि .05 विश्वास स्तर पर प्राप्त सारणी मान 1.96 से अधिक है। अंतः जोधपुर जिले के कला तथा वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

सारणी संख्या 3

जोधपुर जिले के कला तथा विज्ञान विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों से प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र.सं.	स्मूह	समूह संख्या (N)	मध्यमान M	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात (t)	सार्थकता (.05 विश्वास स्तर पर)
1	कला वर्ग के विद्यार्थी	20	39.02	4.33	1.36	असार्थक
2	विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी	20	37.19	4.16		

उपर्युक्त सारणी संख्या 3 के अनुसार जोधपुर जिले के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति के विश्लेषण गणना का क्रमशः मध्यमान 39.02 व 37.19 5.41 प्राप्त हुआ तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 4.33 व 4.16 प्राप्त हुआ। दोनों समूह में विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित अंतर की सार्थकता जांचने हेतु ज्ञात किया गया क्रांतिक अनुपात 1.36 प्राप्त हुआ जो कि .05 विश्वास स्तर पर प्राप्त सारणी मान 1.96 से कम है। अंतः जोधपुर जिले के कला तथा विज्ञान विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-12* August- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सारणी संख्या 4

जोधपुर जिले के विज्ञान वर्ग तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति 20एवं इसके आयामों पर मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र. सं.	स्मूह	समूह संख्या (N)	मध्यमान M	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात (t)	सार्थकता (.05 विश्वास स्तर पर)
1	विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी	20	37.19	4.16	0.72	असार्थक
2	वणिज्य वर्ग के विद्यार्थी	20	36.24	4.19		

उपर्युक्त सारणी संख्या 4 के अनुसार जोधपुर जिले के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति के विश्लेषण गणना का मध्यमान 37.19 व प्रमाप विचलन 4.16 प्राप्त हुआ तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 36.24 व प्रमाप विचलन 4.19 प्राप्त हुआ। दोनों समूह में विद्यार्थियों की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित अंतर की सार्थकता जांचने हेतु ज्ञात किया गया क्रांतिक अनुपात 0.72 प्राप्त हुआ जो कि .05 विश्वास स्तर पर प्राप्त सारणी मान 1.96 से कम है। अतः जोधपुर जिले के विज्ञान तथा वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति में असार्थक अन्तर पाया गया।

सारणी संख्या 5

जोधपुर जिले के कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के छात्रों तथा छात्राओं की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों से प्राप्त मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र.सं.	समूह	समूह संख्या (N)	मध्यमान M	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात (t)	सार्थकता (.05 विश्वास स्तर पर)
1	कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के छात्र	30	38.58	4.46	1.99	सार्थक
2	कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय की छात्रा	30	36.38	4.08		

उपर्युक्त सारणी संख्या 5 के अनुसार जोधपुर जिले के कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के छात्रों तथा छात्राओं की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति के विष्लेषण की गणना से प्राप्त मध्यमान क्रमशः 38.58 व 4. 46 तथा मानक विचलन क्रमशः 36.38 व 4.08 प्राप्त हुआ दोनों समूह में कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित अंतर की सार्थकता जांचने हेतु ज्ञात किया गया क्रांतिक अनुपात 1.99 प्राप्त हुआ जो कि .05 विश्वास स्तर पर प्राप्त सारणी मान 1.96 से अधिक है। अतः जोधपुर जिले के कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के छात्रों तथा छात्राओं की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

परिकल्पना से संबंधित निष्कर्ष

1. जोधपुर जिले के कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तर की होती है।" प्राप्त प्रदतों के आधार पर जोधपुर जिले के कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तर से अधिक पायी अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की गई।
2. जोधपुर जिले के कला तथा वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्राप्त प्रदतों के आधार पर जोधपुर जिले के कला तथा वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की गई।
3. जोधपुर जिले के कला तथा विज्ञान विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्राप्त प्रदतों के आधार पर जोधपुर जिले के कला तथा विज्ञान विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति में असार्थक अन्तर पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की गई।
4. जोधपुर जिले के विज्ञान तथा वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्राप्त प्रदतों के आधार पर जोधपुर जिले के विज्ञान तथा वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर उपयोग के प्रति अभिवृत्ति में असार्थक अन्तर पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की गई।
5. जोधपुर जिले के कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के छात्र तथा छात्राओं की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्राप्त प्रदतों के आधार पर जोधपुर जिले के कला, विज्ञान व वाणिज्य विषय के छात्र तथा छात्राओं की कम्प्यूटर के उपयोग के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की गई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *इबेल, आर.एल. (1996)''मेजरिंग एज्यूकेशनल एचीवमेट प्रोन्टिसहाल ऑफ इण्डिया प्राईवेट लिमिटेडन्यूदेहली''।*

2. *पेटरीसीया, ओ.रोसेकागिल्ड (1980) लर्निंग स्टाइल्स, नोलेजइसयूस एण्ड एप्लीकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ मसाच्यूसेटा*
3. *शैक्षिक अनुसंधान डॉ. प्यारेलाल चौधरी व आर.एल. चौपड़ा।*
4. *डॉ.एच.के कपिल(1984) अनुसंधानविधियाँ*
5. *ग्यूनटिया, स्टेवेन एफ (1984) एडमिनिस्ट्रेटिव कंसिड्रेशन कन्सरनिंग लर्निंग स्टाइल स्टूडेन्ट कान ग्युएन्स ऑन हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स, सेंटनजोन्स यूनिवर्सिटी, न्यूयॉर्क*
6. *एज्यूकेशन, हेरालड क्वेटरलीजनरल,साहजी.एल.काबरा टीचर्स कॉलेज, जोधपुर*

वेबसाईट

1. *www.google.com*
2. *www.wikipedia.org*